International Journal of History 2025; 7(8): 35-37

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2025; 7(8): 35-37
Received: 07-05-2025
Accepted: 13-06-2025

पूनम पिलानिया
शोधार्थी, पी.डी.यू.एस. युनिवर्सिटी, कटराथल, सीकर, राजस्थान, भारत

डॉ. राजेश कुमार पूनिया
शोध निर्देशक, पी.डी.यू.एस. युनिवर्सिटी, कटराथल, सीकर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
पूनम पिलानिया
शोधार्थी, पी.डी.यू.एस. युनिवर्सिटी, कटराथल, सीकर, राजस्थान, भारत

शेखावाटी के ग्रामीण अंचल की स्थापत्य एवं भित्ति चित्रकला में सांस्कृतिक और सामाजिक जीवनः एक अध्ययन

पूनम पिलानिया एवं डॉ. राजेश कुमार पूनिया

सारांश
शेखावाटी राजस्थान का एक प्रमुख सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक क्षेत्र है, जो झुंझुनू, सीकर और चूरू जिलों के अंतर्गत आता है। 15वीं से 19वीं शताब्दी के दौरान यहाँ पर शेखावत राजपूतों के शासन के कारण इस क्षेत्र को श्शेखावाटीश नाम प्राप्त हुआ। यह क्षेत्र अपनी भित्तिचित्र कला, हवेलियों, मंदिरों, किलों और महलों के लिए विश्वविख्यात है। प्रारंभिक भित्तिचित्र धार्मिक और पौराणिक विषयों पर केंद्रित थे, जबकि समय के साथ इनमें सामाजिक, ऐतिहासिक और औपनिवेशिक प्रभाव भी सम्मिलित हुए।
ब्रिटिश आगमन और व्यापारिक गतिविधियों ने यहाँ की कला में नवीनता और विविधता का संचार किया, जिसके परिणामस्वरूप विदेशी शैली, वाणिज्यिक दृश्य और औद्योगिक प्रभाव भी चित्रण में दिखाई देने लगे। मारवाड़ी व्यापारी वर्ग ने अपनी समृद्धि को हवेलियों, मंदिरों और कुओं पर सजाए गए भित्तिचित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया।
शेखावाटी की भित्तिचित्र परंपरा न केवल कलात्मक सौंदर्य का प्रतीक है, बल्कि यह क्षेत्रीय समाज, सांस्कृतिक जीवन, धार्मिक आस्था और ऐतिहासिक घटनाओं का दृश्य अभिलेख भी प्रस्तुत करती है। इसके अध्ययन से कला के विकास, सांस्कृतिक आदान–प्रदान और सामाजिक परिवर्तनों की गहन समझ प्राप्त होती है।

मूलशब्दः शेखावाटी, राजस्थान, भित्तिचित्र, हवेली, मंदिर, सांस्कृतिक विरासत, राजपूत, मारवाड़ी व्यापारी, ब्रिटिश प्रभाव, चित्रकला परंपरा, ऐतिहासिक धरोहर, सामाजिक परिवर्तन, स्थापत्य कला, पौराणिक विषय, औपनिवेशिक कला प्रभाव।

"जोधा जी बसायो जोधपुर, जैसलमेर जैसल भाटी,
कच्छावा वीर शेखाजी के नाम से है शेखावाटी
रोहिड़ा का फूल खिलै, इतरावै कीकर और जांटी,
आयोड़ा का मान अठै, आ ठेठ से परिपाटी,
बड़ी–बड़ी हेलियां, चिकारी बै पर अनूठी,
आ है म्हारी शेखावाटी...."

शेखावाटी उत्तर पूर्वी राजस्थान का एक अर्द्ध शुष्क क्षेत्र है। राजस्थान के सीकर, चुरु और झुंझुनू तीनों जिलों के सम्मिलित भागों को श्शेखावाटी प्रदेशश के नाम से जाना जाता है। इस क्षेत्र में आजादी से पूर्व 15 वीं से 19 वीं शताब्दी तक राव शेखा के वंशजों का शासन होने के कारण इसका नाम शेखावाटी प्रचलन में आया। शेखावाटी शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम बाकिंदास री ख्यात में मिलता है। बांकीदास के समकालीन कर्नल W.S. माली जिन्होंने वर्ष 1803 में शेखावाटी शब्द का प्रयोग किया। इसके उपरान्त कर्नल जेम्स टॉड ने शेखावाटी का पहला इतिहास लिखा वंश भास्कर में शेखावाटी नाम का प्रयोग किया गया। शेखावाटी का नाम राजपूत कच्छवाहा सरदार राव शेखा जी के नाम पर पड़ा है। राव शेखा के वंशज शेखावत कहलाते हैं। शेखावाटी क्षेत्र पाषाण काल से आजादी तक अपने गौरवशाली अतीत के लिए जाना जाता है।
शेखावाटी की माटी की अपनी अहम भूमिका है, यहीं कारण है कि यह अंचल शूरवीर योद्धाओं देश के प्रमुख उद्योगपतियों महान संत महात्माओं और सरस्वती पुत्रों की जन्म स्थली रहा है। शेखावाटी के इस भू– भाग में कई नगर एवं कस्बे व ग्रामीण इलाके हैं। इन नगरीय व ग्रामीण इलाको में कला, साहित्य एवं सांस्कृतिक जीवन का बहुत विकास हुआ। यहां विभिन्न प्रकार के मन्दिरों, भवनों, किलों, छतरियों, बावड़ियों, तालाबों, कुओं, धर्मशालाओं एवं रमणीय व आकर्षित करने वाले चित्रों से सुसज्जित हवेलियों का निर्माण हुआ, जो कला की अनुपम धरोहर है। इन नगरों व ग्रामों का इतिहास अति महत्वपूर्ण रहा है। शेखावाटी के भित्ति चित्रण की परंपरा बहुत प्राचीन है। यहाँ के

प्रारम्भिक चित्र हमें उदयपुरवाटी के संत जोगीदास शाह की छतरी एवं परसरामपुरा में स्थित गोपीनाथ मन्दिर में देखने को मिलती है। प्रारंभिक चित्र पौराणिक तथा धार्मिक विषयों पर थे। लेकिन कालान्तर में यहाँ की भित्तियों पर सभी प्रकार के विषयों से सम्बन्धित चित्र चित्रित होने लगे। यहाँ के भित्तिचित्रों पर ब्रिटिश मुगल एवं राजस्थानी शैलियों का प्रभाव सुस्पष्ट देखने को मिलता है। इनसे प्रभावित होने के बावजूद इस शैली की अपनी अलग विशेषता है।

लोक देवीं–देवताओं, रीति–रिवाजों एवं पर्वों और मांगलिक संस्कारों के भित्तिचित्र शेखावाटी की सांस्कृतिक गतिविधियों का भी परिचायक है। इनमें अधिकतर भित्तिचित्र धार्मिक हैं जिनमें लोक कथानक चित्रों की अधिकता है। शेखावाटी क्षेत्र में स्थापत्य की अपनी एक विशिष्ट पहचान है जिससे समग्रता का एहसास होता है। स्थापत्य कला महल, गढ़, किले, हवेली, मंदिर, कुएं बावड़ी, मस्जिद छतरी आदि अनेक रूपों में अभिव्यक्त की गई है। जो प्रत्येक भित्तिचित्रों से सुसज्जित है, भित्तिचित्र शेखावाटी का ऐसा बिम्ब हैं, जिसमें तत्कालीन समाज का सच्चा प्रतिबिंब देखने को मिलता है। शेखावाटी की प्राकृतिक सुन्दरता एवं विभिन्न रंगो को मूल रूप मध्ययुगीन काल में दिया गया। राजा, महाराजा, सेठों ने इस सौन्दर्य अर्थात् इन्द्रधनुष के रंगों को महलों, हवेलियों, कुओ, बावड़ियों तथा छतरियों पर उकेरना प्रारम्भ किया और भित्ति चित्रों की ये परम्परा 19वीं शताब्दी में अपनी चरम सीमा पर थी। परन्तु शेखावाटी में भित्तिचित्रों की यह परम्पर 17वीं शताब्दी से मानी जाती है। इसका प्रमुख प्रमाण 1749 में उदयपुरवाटी में संत जोगीदास शाह की छतरी एवं 1758 में शार्दुल सिंह की छतरी जो कि परसरामपुरा गाँव में बनी हैं, इन पर बने भित्ति चित्र हैं।

इस क्षेत्र के भित्ति चित्रों का मुख्य विषय धार्मिक ही रहा। ये चित्र उस समय की जीवन शैली को प्रदर्शित करते हैं जब वहां न कोई कोई लिखित कानून था और न ही अपराध रोकने जैसे कोई व्यवस्था थी। स्थानीय जनता के अनुसार धार्मिक एवं सांस्कृतिक भावनाओं के माध्यम से ही समाज में लोगों के रहन सहन को नियंत्रित किया जा सकता था। अतः लोगों को धर्म का संदेश देने नए–नए आविष्कारों, साधनों से जनता को अवगत कराने, यहाँ तक कि रोजमर्रा की जिन्दगी को भी भित्ति चित्रों के माध्यम से व्यक्त किया गया था। शेखावाटी क्षेत्र में यंहा का व्यापारी वर्ग इस क्षेत्र से गुजरने वाले व्यापारियों के साथ अपना व्यापार करते तथा धन कमाते थे। शेखावाटी का क्षेत्र उस समय का व्यापारिक मार्ग था। शेखावाटी के व्यापारी सेठ केवल इसी क्षेत्र पर नहीं बल्कि पश्चिमी देशों के कारोबारियों यथा– ईरान, ईराक, अफगानिस्तान आदि के साथ भी धन लाभ हेतु व्यापार का कार्य करते थे। ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा बंदरगाहों की सुविधा उपलब्ध कराने के बाद व्यापारी सेठ कलकत्ता, मद्रास, मम्बई आदि स्थानों में जाकर बस गए। इसी से उन्होने अधिक धन अर्जित किया। तथा इस धन का प्रयोग फिर अपनी जन्मभूमि पर अनेकों हवेलियां, मन्दिर बनवाकर किया, तथा उन हवेलियों पर विभिन्न प्रकार के भित्ति चित्रों का निर्माण करवाया। इस प्रकार धीरे–धीरे शेखावाटी क्षेत्र में भित्ति चित्रों का विकास होने लगा।

शेखावाटी के इस विकास ने जो गति पकड़ी उसके उदाहरण हमारे सामने वर्तमान की शेखावाटी की हवेलियों, मकान बावड़ियो, धर्मशालाओं छतरियों आदि में बनाए हुए भित्ति चित्र दर्शाते हैं। शेखावाटी की हवेलियां कस्बों एवं गाँवों में अधिक हैं, जिन में शामिल हैं– झुंझुनू में टीबड़ेवाला की हवेली तथा ईसरदास मोदी की हवेली अपने शिल्प वैभव के कारण अलग ही छवि लिए हुए हैं। मण्डावा (झुन्झुनू) में सागरमल लाडिया, रामदेव चौखाणी तथा रामनाथ गोयनका की हवेली, डूंडलोद (झुंझुनू) में सेठ लालचन्द गोयनका, मुकुन्दगढ़ (झुंझुनू) में सेठ राधाकृष्ण एवं केसर देव कानोड़ीया की हवेलियों, चिड़ावा (झुन्झुन) में बगड़िया की हवेली, डालमिया की हवेली, महनसर (झुन्झुनू) की सोने–चांदी की हवेली (जिसमें सोने व चांदी की उमदा कलाकारी एक अलग पहचान रखती है।) श्रीमाधोपुर (सीकर) में पंसारी की हवेली, लक्ष्मणगढ़ (सीकर) केडिया एवं राठी की हवेली प्रसिद्ध हैं।

झुंझुनूं जिले की ये उंची–ऊंची हवेलियाँ बलुआ पत्थर, ईंट, जिप्सम एवं चुना, काष्ठ तथा ढलवाँ धातु के समन्वय से निर्मित आपने अन्दर भिति चित्रों की छटा लिये हुए हैं। सीकर में गौरीलाल बियाणी की हवेली, रामगढ़ (सीकर) में ताराचन्द रुईया की हवेली समकालीन भित्तिचित्रों के कारण प्रसिद्ध हैं। फतेहपुर (सीकर) में नन्दलाल देवड़ा, कन्हैंयालाल गोयनका की हवेलियां भी भित्तिचित्रों के कारण प्रसिद्ध हैं। चुरू की हवेलियों में मालजी का कमरा, रामनिवास गोयनका की हवेली, मंत्रियों की हवेली इत्यादि प्रसिद्ध हैं। चुरु सुराणा की हवेली में 1100 दरवाजे एवं खिड़कियां हैं। शेखावाटी की हवेलियां अपनी विशालता और भित्ति चित्रकारी के लिए विश्व में प्रसिद्ध हैं। इन्हें देखने के लिए साल भार देशी – विदेशी पर्यटकों का तांता लगा रहता हैं। शेखावाटी की हवेलियों में अराइस की आलागीला पद्धति और दीवार की सुखी सतह पर भी चित्रांकन मिलते हैं। अराइस की गीली सतह के चित्रों में स्कैच (कुराइ) तकनीक का सुन्दर प्रयोग किया गया हैं। अन्दर का हिस्सा आज भी सुरक्षित व सजीव हैं। ये भित्ति चित्र 150 से 200 साल पुराने हैं, इन्हें दीवार पर चूने का प्लास्टर करके बनाया जाता था। पत्थर की पिसाई कर उन्हें पेड़–पौधों की पत्तियों और प्राकृतिक रंगों के साथ गीले प्लास्टर में मिलाकर तालमेल से हवेली की दीवारों पर पेंटिंग की जाती थी। गीले प्लास्टर में ये रंग पूरी तरह समा जाते थे। इस तरह के रंग फैलने की बजाय अंदर तक जड़ पकड़ लेते थे, तभी तो 200 वर्ष पुरानी ये पेंटिंग आज भी नयनाभिराम हैं। अपनी चित्रित हवेलियों महलों और अन्य कई ऐतिहासिक धरोहरों के लिए प्रसिद्ध शेखावाटी को "ऑपन आर्ट गैलरी ऑफ राजस्थान" के नाम से भी जाना जाता हैं। नदीने प्रिंस हवेली, मोरारका हवेली म्यूजियम, डॉ. रामनाथ ए. पोद्दार हवेली म्यूजियम, जगन्नाथ सिंघानिया हवेली और खेतड़ी महल यहाँ के प्रमुख आकर्षक स्थल हैं। 1802 में बनाई गई नदीने प्रिंस हवेली के नए मालिक एक कलाकार ने इसे आर्ट गैलरी और सांस्कृतिक केन्द्र में परिवर्तित कर दिया हैं। डॉ. रामनाथ ए. पौदार हवेली म्यूजियम में राजस्थानी संस्कृति को दर्शाते कई चित्र मौजूद हैं। मोरारका हवेली म्यूजियम लगभग किला हैं, जब की खेतड़ी महल 1770 में बनी बहु मूल्य ऐतिहासिक धरोहर हैं, हम यहाँ भी प्राचीन वास्तुकला देख सकते हैं।

मडावा, मुकुंदगढ़ और डूंडलोद के किले शेखावाटी के प्रमुख किलों में से हैं। वर्तमान में मंडावा का किला हेरिटेज होटल बन गया है जब कि डूंडलोद किला यूरोपियन चित्रों के बहुत बड़े संग्रहालय के रूप में परिवर्तित हो गया है। मुकुंदगढ़, किला 8000 वर्गमीटर में फैला है और इसके विशाल बरामदे आंगन और दरवाजे इसकी शोभा बढ़ा रहे हैं। शेखावाटी प्रांत के मध्य में स्थित मंडावा एक छोटा सा शहर है। मंडावा अपने किलों और हवेलियों के लिए प्रसिद्ध है। यह किला बहुत सुन्दर है और इसके प्रवेश द्वार पर बने भगवान कृष्ण और उनकी गायों की चित्र कलाएं और भी सुन्दर हैं। इस किले का निर्माण 1812 विक्रम संवत में राजा शार्दूल सिंह के बेटे ठाकुर नवल सिंह ने करवाया था। इसका निर्माण मध्य युगीन शैली में हुआ और किले में बने भित्ति चित्र इसकी शोभा बढ़ाते हैं। किले के कमरों में कई प्रकार की नक्काशियां, आईनो पर की गई कारीगरी, भगवान कृष्ण के चित्र मौजूद हैं।

शेखावाटी के मुकुंदगढ़ शहर की स्थापना 18 वीं सदी में राजा मुकुंद सिंह ने की थी। यहां की हवेलियां अपने दीवान खाने और दीवारों पर की गई भिन्न–भिन्न तरह की चित्रकारिता के लिए प्रसिद्ध हैं। इन हवेलियों के दीवान खानों में 17 वीं और 18 वीं सदी की पारिवारिक तस्वीर लकड़ी का फर्नीचर और दीवारों पर टंगी तस्वीरे व हथियार देखने को मिलते हैं। हवेली की छत्रियो

पर बने परिवारवालों के चित्र अति सुन्दर हैं। यहां के बहुत सारे मन्दिर भगवान कृष्ण को समर्पित हैं जिन में से विष्णु गोपाल मन्दिर और गोपीनाथ मंदिर प्रमुख हैं। शेखावाटी के अन्य शहरों की तरह फतेहपुर भी अपने वैभव और चित्रित हवेलियों के लिए प्रसिद्ध हैं। 1865 में बनाई गई गोयनका हवेली की दीवारों की चित्रकला इसे यहाँ की अन्य हवेलियों से श्रेष्ठ बनाती है। हवेली की छत पर बने चित्र बहुत आकर्षक हैं, जो इस हवेली की खुबसूरती को निखारते हैं।

हवेलियों के रंग पहले संपन्नता के प्रतीक बने, और फिर परम्परा बन गए। खेती करते हुए किसान से लेकर युद्ध करते हुए सेनानी, रामायण की कथाओं से लेकर महाभारत के विनाश तक, देवीं देवताओं से लेकर ऋषि–मुनियों तक हवेली की हर चौखट हर आला रंग–पुता। इंसान की कल्पना जितनी उड़ान भर सकती थी, वो सब हवेलियों की दिवारों पर उकेरा गया हैं तथा उनको रंग प्रदान किया गया।

राजस्थान के भित्ति चित्रो पर मुगल प्रभाव था तो स्वाभाविक है कि उनका प्रभाव शेखावाटी पर भी पड़ना था। इसी के फलस्वरुप बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में शेखावाटी की प्रत्येक हवेली पर भित्ति चित्रण होने लगा। यहां के लगभग सभी भित्ति चित्र मुगल प्रभाव से ओत प्रोत हैं लेकिन फिर भी ये शेखावाटी की भित्ति चित्र परम्परा एवं उनकी विकास की कहानी के उत्कृष्ठ उदाहरण हैं।

जब 18 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अंग्रेजो की एक व्यापारिक मंडी श्ईस्ट इण्डिया कम्पनी श्ने भारत में अपना अस्तित्व बना लिया था और फिर अंग्रेजों ने भारत के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक क्षेत्रों में अपनी जड़े जमा ली थी। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने 19वीं शताब्दी में भारत एवं उसके राज्यों को श्कम्पनी चित्रण शैलीश देकर भारतीय कला क्षेत्र में वृद्धि की थी।

ब्रिटिश शैली से प्रभावित शेखावाटी के भित्ति चित्रों में लोक जीवन की झांकी देखने को मिलती है। अंग्रेजी आगमन से आवागमन के संसाधनों, रहन सहन, वेशभूषा तथा नवींन आविष्कारों के कारण सेठ लोग प्रभावित हुए और उन्होंने कम्पनी सभ्यता के प्रभाव को अपनी हवेलियों में अंकित करवाया। अंग्रेजी सभ्यता के कारण भित्ति चित्रों की विषय वस्तु में भी बदलाव हुआ। 17वीं से 19वीं शताब्दी तक इस शैली का विकास हुआ। इस क्षेत्र के प्रारम्भिक चित्र मुख्यतः धार्मिक एवं पौराणिक विषयों से सम्बन्धित होते थे, परन्तु अंग्रेजो के आने के उपरान्त औपनिवेशिक प्रभाव यहाँ के भित्तिचित्रों में नजर आने लगा। यहाँ के चित्रकार अंग्रेजी शैली की नकल करने लगे। इस प्रभाव के कारण मोटर गाड़ी, पुरानी परम्परा में प्रचलित हाथियों से ज्यादा प्रचलित हो गई और फरिश्ते (एंजिल्स) पौराणिक परम्परा के देवीं–देवताओं से अधिक लोकप्रिय हो गई। ब्रिटिश प्रभाव के कारण भित्तिचित्रों में भारतीय सैनिकों के स्थान पर विदेशी टोपधारी सैनिकों के चित्रांकन का विकास होने लगा। बग्गियों में राजा–रानी, महाराजा, सेठ सेठानियों के स्थान पर अंग्रेजी बाबू मेम के चित्रों का विकास नजर आने लगा था। मारवाड़ियों को कारों में बैठे, चलाते हुए आदि का चित्रण होने लगा था। वेशभूषा की दृष्टि से भी भित्ति चित्रों के विकास के चरण आगे बढ़ रहे थे, जैसे कि क्षेत्रीय वेशभूषा धोती कुर्ता के स्थान पर अंग्रेजी सूट–पेन्ट का चित्रांकन आरम्भ हो गया था। भारतीय स्त्रियों के स्थान पर अंग्रेजी मेम के चित्र बनने लगे थे। अंग्रेजी मेम को पुस्तकें पढ़ते हुए, कुत्तों को खिलाते हुए, सितार बजाते हुए, छाता पकडे हुए आदि मुद्राओं में अंकित किया गया।

ब्रिटिश प्रभाव ने भित्ति चित्रों की विषय वस्तु ही नहीं बल्कि रंग भरने की पद्धति को भी प्रभावित किया। अब विदेशी रंगों एवं छाया प्रकाश का प्रचलन होने लगा। प्रारम्भिक चित्रों में प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता था जिन्हें कलाकार अपने हाथों से सिलबट्टे व लोडी से पीसकर तैयार करता था। परन्तु ईस्ट इण्डिया कम्पनी के आगमन के बाद कृत्रिम रंगों का प्रयोग होने लगा। शेखावाटी के भित्तिचित्रों को यांत्रिक साधनों, अंग्रेजो की वेशभूषा आदि ने ही प्रभावित नहीं किया वरन् कलकत्ता,बम्बई, मद्रास में घटित होने वाली घटनाओं तथा अंग्रेजो द्वारा बनाने गये भवनों व स्टेडियमों ने भी प्रभावित किया जिसे उन्होंने भित्ति चित्रों में चित्रित किया है। उदाहरण के लिए लक्ष्मणगढ़ में स्थित पालड़ीवाल की हवेली हैं जिसमें बम्बई, मद्रास, कलकत्ता आदि में स्थित प्रसिद्ध भवनों आदि को चित्रित किया गया हैं। इन चित्रों में यहां इस क्षेत्र पर कम्पनी प्रभाव सुस्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता हैं।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र के भित्ति चित्रों की परम्परा प्राचीनतम थी एवं इसका विकास धीरे–धीरे मुगल, ब्रिटिश एवं अन्य प्रभावों के कारण हुआ हैं। इस विकास के पथ में अनेक प्रोत्साहन एवं बा धाओं ने अपना मुकाम बनाया लेकिन 20वीं सदी में लोगों की रुचि में बदलाव होने लगा और पर्यटकों के विकास के साथ ही इन चित्रों की ओर पुनः रुझान पैदा हुआ। इस रुझान ने ही शेखावाटी के भित्ति चित्रों के फलस्वरूप शेखावाटी में भित्ति चित्रांकन के प्रति शोध की जिज्ञासा बढी हैं। अत: शेखावाटी के ग्रामीण अंचल की स्थापत्य एवं भित्ति चित्रकला में सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के विभिन्न आयामों एवं पक्षों के अध्ययन की असीम संभावनाएं प्रतीत होती हैं।

संदर्भ ग्रंथसूची

1. कर्नल जेम्स: 1971, राजस्थान का इतिहास भाग – 1 एवं भाग–2, साहित्यागार जयपुर '2008'।
2. Rajasthan History Congress. Volume December 2019
3. Rajasthan History Congress Department ofHistory J.N.V. University, Jodhpur
4. सुरजन सिंह झाझड़: 1983, राव शेखा, सीकर।
5. सूर्यनारायण शर्मा, खंडेला का इतिहास, आगरा।
6. उदयवीर शर्मा: 2000 शेखावाटी का लोकरंग, राजस्थान साहित्य समितिबिसाऊ।